कक्षा-12

दिगंत

भाग-2

दिगंत

(भाग - 2)

बारहवीं कक्षा की हिंदी पाठ्यपुस्तक

(राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत ।

राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड

प्रथम संस्करण : 2008
पुनर्मुद्रण : 2012
पुनर्मुद्रण : 2014

Reprint : 2014-15

पुनर्मुद्रण : 2018-19

मूल्य : रु० 50.00

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800001 द्वारा प्रकाशित तथा धनराज प्रिन्टींग प्रेस कुन कुन सिंह लेन पटना-800004 द्वारा 70 जी.एस.एम. मैपलिथो वर्जिन पल्प टेक्स्ट पेपर एवं 130 जी.एस.एम. पल्प बोर्ड व्हाईट वर्जिन पल्प आवरण पेपर पर कुल50,000प्रतियाँ 24 x 18 से. मी. साईज में मुद्रित।

प्राक्कथन

मानव संसाधान विकास विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार जुलाई 2007 से राज्य की उच्च माध्यमिक कक्षाओं (कक्षा- XI-XII) हेतु नए पाठ्क्र को लागू किया गया है। इस नए पाठ्यक्रम के आलोक में एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली द्वारा विकसित कला, विज्ञान एवं वाणिज्य विषयक पाठ्य-पुस्तक, जिसे बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम द्वारा आवरण डिजाईनिंग कर मुद्रित किया गया है, को बिहार राज्य में पाठ्य-पुस्तक के रूप में स्वीकार किया गया है। यह पुस्तक उसी अनुक्रमणिका की एक कड़ी है।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा (कक्षा- I-XII) के गुणवत्तापूर्ण सशक्तिकरण के निमित्त कृत संकल्पित एवं शिक्षा के समर्थ योजनाकार माननीय मुख्यमंत्री, श्री नीतिश कुमार, शिक्षा मंत्री, श्री कृष्ण नन्दन प्रसाद वर्मा तथा शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव श्री आर0 के0 महाजन के मार्ग निर्देशन के प्रति हम कृतज्ञ है।

कक्षा-I-XII तक की पुस्तकों को विकसित कर एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली ने राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था को एक अनुपम उपहार दिया है। हमें आशा है कि ये पुस्तकें भारत की वर्त्तमान एव भावी पीढ़ी के लिए ज्ञानोपयोगी सिद्ध होगी। एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक प्रो0 कृष्ण कुमार के हम आभारी है, जिन्होने बिहार राज्य से नए अध्ययन दल के सदस्यों, श्री नयनरंजन कुमार वर्मा, शैक्षिक निबंधक (बि0रा0पा.पु.नि.) श्री शिव पूजन सिंह, उत्पादन प्रबन्धक (बि0रा0पा.पु.प्र.निम.) एवं श्री ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, व्याख्याता सीमैट-सह-अकादमिक संयोजक, पाठ्यक्रम एंव पाठ्य-पुस्तक विकास समिति एन. सी.ई.आर.टी., बिहार को अपना बहुमूल्य मार्गनिर्देशन देकर पुस्तक की गुणवक्ता में सुधार हेतु आवयश्यक यहयोग प्रदान किया।

हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विशवास है कि प्रस्तुत पुस्तक, ज्ञानवर्धक, ज्ञानोपयोगी एवं उपलब्धिस्तर की वृद्धि में सहायक सिद्ध होगी। यद्यपि संवर्द्धन एवं परिष्करण की सम्भवनाएँ सदैव भविष्य की गोद में सुरक्षित रहती हैं, फिर भी प्रकाशन एवं मुद्रण में निरन्तर अभिवृद्धि करने के प्रति समर्पित बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदो की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा, जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके।

अरविन्द कुमार वर्मा, भा0 प्रा0 से0

प्रबन्ध निर्देशक

बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि0

संरक्षण

श्री हसन वारिस, निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार ।
श्री रघुवंश कुमार, निदेशक (शैक्षणिक), बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक प्रभाग), पटना ।
श्री सैय्यद अब्दुल मोईन, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार ।

पाठ्यपुस्तक विकास समिति

अध्यक्ष, हिंदी भाषा समूह

प्रो० भृगुनंदन त्रिपाठी, हिंदी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।

समन्वयक, हिंदी भाषा समूह

डॉ० हेमंत कुमार हिमांशु, सहायक संपादक, ज्ञान विज्ञान, पटना ।

सदस्य, हिंदी भाषा समूह

श्री आशुतोष पार्थेश्वर, व्याख्याता, हिंदी विभाग, ओरियंटल कॉलेज (मगध विश्वविद्यालय), पटना ।
श्री ब्रजेश पाण्डेय, व्याख्याता, हिंदी विभाग, एल० पी० शाही कॉलेज (मगध विश्वविद्यालय), पटना ।
डॉ० संजय कुमार सिंह, हिंदी विभाग, ए० एन० कॉलेज (मगध विश्वविद्यालय), पटना ।

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक) की समीक्षा समिति के सदस्य

प्रो० रामबुझावन सिंह, निदेशक, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना ।
डॉ० जगदीश नारायण चौबे, अ०प्रा० प्रोफेसर, हिंदी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।
डॉ० अमर कुमार सिंह, प्रोफेसर, हिंदी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।

अकादमिक सहयोग

डॉ० कासिम खुर्शीद, अध्यक्ष, भाषा शिक्षा, शिक्षा विभाग, एस० सी० ई० आर० टी०, पटना ।
डॉ० अर्चना, व्याख्याता, एस० सी० ई० आर० टी०, पटना ।
श्रीमती वीर कुमारी कुजूर, व्याख्याता, एस० सी० ई० आर० टी०, पटना ।
डॉ० स्नेहाशीष दास, व्याख्याता, एस०सी०ई०आर० टी०, पटना-।

अकादमिक संयोजक, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विकास समिति

श्री ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान (सीमैट), एस० सी० ई० आर० टी०, पटना ।

आमुख

यह पुस्तक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2006 के आलोक में विकसित नवीन पाठ्यक्रम (2007) के आधार पर तैयार की गई है । इस पुस्तक के विकास में इस बात का ध्यान रखा गया है कि "शिक्षा का मतलब बिहार के स्कूली शिक्षार्थियों को इतना सक्षम बना देना है कि वे अपने जीवन का सही-सही अर्थ समझ सकें, अपनी समस्त योग्यताओं का समुचित विकास कर सकें, अपने जीवन का मकसद तय कर सकें और उसे प्राप्त करने हेतु यथासंभव सार्थक एवं प्रभावी प्रयास कर सकें, और साथ ही साथ इस बात को भी समझ सकें कि समाज के दूसरे व्यक्ति को भी ऐसा ही करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है ।" राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2006 हमें बताती हैं कि शिक्षार्थी के स्कूली जीवन और स्कूल से बाहर के जीवन में अंतराल नहीं होना चाहिए । किताब और किताब से बाहर की दुनिया आपस में गुँथी होनी चाहिए । आशा है कि यह कदम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित शिक्षार्थी केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफी दूर तक ले जाएगा ।

इस पुस्तक में किशोरियों-किशोरों की कल्पनाशक्ति के विकास, उनकी गतिविधियों की सृजनशीलता, उनके सवाल करने और उनका उत्तर पाने के मौलिक अधिकार के समुचित संरक्षण और उसे रचनात्मक दिशा देने की कोशिश की गई है । निश्चय ही इसमें शिक्षार्थियों के साथ-साथ शिक्षकों की भी गहरे लगाव के साथ उतनी ही भूमिका होनी चाहिए । शिक्षार्थियों के प्रति संवेदना और सहानुभूति के साथ उन्हें पुस्तक में गहरी सक्रिय सहभागिता बरतनी होगी और लेखक परिचय, मूल पाठ और उसके साथ संलग्न अभ्यास प्रश्नों के संदर्भ में समुचित जागरूकता दिखानी होगी । हर पाठ के साथ अनेक तरह के अभ्यास हैं जिनसे शिक्षार्थियों की पाठ पर पकड़ तो बनेगी ही, साथ ही उनके भीतर व्यापक जिज्ञासा को प्रोत्साहन मिलेगा । पुस्तक की परिकल्पना में अनेक महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखा गया है । भाषा और साहित्य के ढर्रे में बँधे घेरों को सकारात्मक स्तर पर तोड़ने और वृहत्तर अनुभव क्षेत्रों को उनसे जोड़ने के साथ-साथ वैविध्यपूर्ण पाठ शृंखला को उबाऊ होने से बचाते हुए ऐसा प्रयत्न किया गया है कि पाठ बोझिल न हों तथा सामयिक जीवन संदर्भों से जुड़ कर छात्र के लिए रोचक बन जाएँ । छात्र उत्सुकता और आनंद के साथ तनावमुक्त रीति से उन्हें पढ़ते हुए बहुविध जानकारी प्राप्त करें और उस जानकारी का ज्ञान के सृजन में उपयोग कर सकें ।

एस० सी० ई० आर० टी० सर्वप्रथम बिहार के मुख्यमंत्री माननीय श्री नीतीश कुमार, मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार के माननीय मंत्री श्री हरिनारायण सिंह एवं प्रधान सचिव श्री अंजनी कुमार सिंह, इस पुस्तक में शामिल रचनाकारों, उनके प्रकाशकों एवं परिवारजनों के प्रति विशेष आभार प्रकट करती है, और साथ ही इस पुस्तक के विकास के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक विकास समिति के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करती है । हिंदी भाषा समूह के अध्यक्ष प्रो० भृगुनंदन त्रिपाठी, समन्वयक डॉ० हेमंत कुमार हिमांशु, सदस्य श्री आशुतोष पार्थेश्वर, श्री ब्रजेश पाण्डेय और डॉ० संजय कुमार सिंह के प्रति हम विशेष आभार प्रकट करते हैं । इन्होंने गहरी सूझबूझ, अथक परिश्रम और भावात्मक लगाव के साथ इस कार्य को तत्परतापूर्वक संपन्न किया । प्रो० रामबुझावन सिंह, डॉ० जगदीश नारायण चौबे एवं डॉ० अमर कुमार सिंह ने पुस्तक-निर्माण की प्रक्रिया में समय-समय पर अपने रचनात्मक सुझावों और परामर्शों से हमें लाभान्वित किया, एतदर्थ हम इनके भी आभारी हैं । पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विकास समिति के अकादमिक संयोजक श्री ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी के प्रति भी हम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं । श्री त्रिपाठी की एकनिष्ठ सक्रियता का ही परिणाम है कि यह पुस्तक आपके हाथों में पहुँच सकी है । पुस्तक की कंपोजिंग, पेज मेकिंग और टाइप सेटिंग के लिए एरिश कंप्यूटर, रमना रोड, पटना के अखिलेश कुमार और मुदस्सर नजर बधाई के पात्र हैं ।

पुस्तक आपके हाथों में है । इसे पढ़ने-पढ़ाने के प्रसंग में हुए अनुभवों से उपजे परामर्शों एवं सुझावों की हमें हमेशा प्रतीक्षा रहेगी ।

निदेशक
राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

यह पुस्तक

बिहार के कक्षा-12 के छात्रों के लिए हिंदी की यह नवीन पाठ्यपुस्तक है 'दिगंत' (भाग-2) । यह पुस्तक बिहार सरकार की ओर से एस० सी० आर० टी० (बिहार) के तत्त्वावधान में सरकार की नई शिक्षा नीति के अनुरूप तैयार की गई है । नए पाठ्यक्रम का स्वरूप निर्धारण विशेषज्ञों द्वारा समय-समय पर विशेष रूप से आयोजित परिसंवादों, गोष्ठियों और कार्यशालाओं में हुआ । एक बहुस्तरीय जटिल विमर्श की सतत प्रक्रिया द्वारा नए-पुराने, प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय स्तर के अनेक पाठ्यक्रमों तथा पाठ्यपुस्तकों की तुलनात्मक समीक्षा करते हुए नया पाठ्यक्रम स्वरूप ले सका । स्वभावतः इस नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार पुस्तक के स्वरूप और निर्माण में भी बेहद गंभीरता और सावधानी बरतने की कोशिश की गई है । यह पुस्तक कक्षा-11 के लिए प्रस्तुत की जा चुकी पुस्तक 'दिगंत' (भाग-1) की अगली कड़ी और उसका विस्तार है । दोनों खंडों की परिकल्पना और संरचना मूलतः एक, और अखंड है; किंतु इस एकता और अखंडता की रक्षा करते हुए भी इस तथ्य का ध्यान रखा गया है कि कक्षा-11 में पढ़ी गई पुस्तक से प्राप्त और अर्जित क्षमताएँ अब छात्र के मूलधन का हिस्सा बन चुकी हैं । भाषा, साहित्य और समाज के संबंध में छात्रों में जो समझ बन चुकी है; बोध, रुचि, संवेदना और जिज्ञासा का जो स्तर विकसित हो चुका है; उसका निर्वाह, संपूर्ति और विकास करते हुए आगे के लिए एक स्वस्थ, सजग, विश्वसनीय और वयस्क उन्मुखीकरण भी संभव हो सके । साहित्य हमारी सामाजिकता का बहुमुखी विकास करता है, इस प्रक्रिया में हमारी वैयक्तिकता भी निखरती चलती है; किंतु साहित्य इतना ही नहीं करता । वह समयबोध और वास्तविकता की हमारी समझ को भी गहराता और प्रामाणिक करता चलता है । विचार, भाव, ऐंद्रिय बोध और नैतिकता के तुलों पर हमें वयस्क, उत्तरदायी और कल्पनाशील बनाता है । स्पष्ट है कि एक ऐसी कक्षा और वय के छात्रों के लिए, जिनकी आगे की हिंदी भाषा-साहित्य की औपचारिक शिक्षा स्वैच्छिक हो जानेवाली हो, पुस्तक तैयार करते समय साहित्य की इन विशेषताओं को ध्यान में रखने की कोशिश की गई है । रचनाओं, विधाओं, रूपों और अंततः उनके रचनाकारों के सचेत चयन-निर्धारण द्वारा ध्यान रखा गया है कि संकलित-संपादित साहित्य से पूर्वकथित हितों की सिद्धि हो ।

हिंदी की हजार से अधिक वर्षों की व्याप्ति, अंतरप्रादेशिक तथा अंतरराष्ट्रीय विस्तार, अंतरवैभाषिक गहनता, विविध विषय-वस्तुओं की बहुस्पर्शिता आदि से भरपूर समग्र वाग्वैभव और मनीषा को उसकी विविधता में सहेज-समेट पाना भोली चाहत मानी जाएगी । भोली और शायद इसीलिए कठिन, मुश्किल और असंभव भी । खास तौर से स्कूल की एक मध्यमान कक्षा के लिए तैयार की जानेवाली पाठ्यपुस्तक के संक्षिप्त आयतन में । पर फिर भी ऐसा करने की ललकार भरी चुनौती और जरूरत तो बनी ही रह जाती है । यहाँ भी वह रही है, और बिहार के छात्रों को ध्यान में रखते हुए, उसका सामना करने की कोशिश की गई है ।

इस पुस्तक की पाठ्य सामग्री 'दिगंत' (भाग-1) की तरह ही तीन खंडों में विभाजित है—गद्य, कविता और हिंदीतर विश्व कहानियों का एक छोटा, किंतु रुचिकर एवं अर्थपूर्ण, संपूरक खंड । इन खंडों के एक बार फिर स्वतंत्र उपनाम और अपने आप्तभाषित हैं । रचना और रचनाकारों की अनुक्रमणी पुरोगामी है, पश्चगामी नहीं । नवयुग और आधुनिकता पर बल है, पर परंपरा और इतिहास की स्वस्थ स्मृति भी है । पुरोगामी गंगा जैसे विस्तीर्णतर और बहुमुखी

होती आई है; हमारी भाषा और साहित्य की भी यही वास्तविकता है । इस छोटी सी पाठ्यपुस्तक के उत्तर खंड में यही वास्तविकता दिखे–इस बारे में सजगता बरती गई है । कविता खंड में पाँच प्राचीन या मध्यकालीन कवि हैं तो आठ विविध भावभूमियों के आधुनिक कवि । आधुनिक युग में कविता की विकासगति द्रुत और बहुभूमिक है । आधुनिक काव्य में व्यक्त भावबोध और यथार्थ की बहुरूपता की एक उत्तेजक झलक मिल सके, इसलिए आधुनिक कवियों का अनुपात और चयन यही उचित और आवश्यक जान पड़ा । खेद है कि तेरह कवियों में केवल एक बिहार का निकल सका और वह भी अब झारखंड का ऐसा कवि रहा जो उत्तर प्रदेश में निवसित है । ध्येय रहा है हिंदी कविता और हिंदी कवियों को पढ़ाना । उनमें कहीं बिहार आ जाए तो स्वागत और प्रसन्नता है, नहीं आ पाए तो मलाल नहीं; बिहार और हिंदी एक दूसरे से बाहर नहीं हैं । कहना न होगा कि यह पुस्तक हिंदी की पाठ्यपुस्तक है, बिहार के हिंदी लेखकों के साहित्य की पाठ्यपुस्तक नहीं । बिहार, जो विविध होकर भी एक और अखंड भारत का लघुरूप ही है, अपने निसर्ग से ही प्रादेशिक संकीर्णताओं से ऊपर रहा है । आरंभ से ही उसकी दृष्टि और मनीषा में 'भूमा' की कल्पना रही है, 'अल्प' का आग्रह नहीं । गद्य खंड में भी दृष्टिकोण यही है । निबंध, कहानी, आत्मकथा, डायरी, भाषण, पत्र, एकांकी, यात्रा-वृत्त, आलोचना आदि विधाओं की यहाँ प्रत्यक्ष प्राणवान प्रस्तुति है । परोक्ष रूप से इनमें और भी बहुत कुछ का संस्पर्श और रंग है । ये रचनाएँ विचार, भावना, कल्पना और अनुभव तंत्र को जगातीं, संस्कारित करतीं, निखारतीं और प्रेरित करती हैं । रचनाओं के साथ लेखकों के द्विविध परिचय–तथ्यात्मक और व्याख्यात्मक–उसी तरह दिए गए हैं; रचनांत में अभ्यास भी वैसे ही विपुल और विविध दिए गए हैं । अभ्यासावली का उद्देश्य दिगंत-1 में भी परीक्षा की तैयारी करवाना नहीं था और यहाँ एक बार फिर वही टेक रखी गई है । अध्यापन में इसका अभ्यास और मशक्कत करवाई जानी चाहिए । यहाँ तो ध्येय रहना चाहिए पाठ, पाठ और केवल पाठ । पाठ का रेशा-रेशा जाना-पहचाना और समझा हुआ हो जाए, प्रयास यही रखा गया है । हर पाठ के साथ सज्जा-अलंकरण के तौर पर कुछ उद्धरण सामग्री दी गई है जिसका रचनात्मक महत्त्व है । बहुधा यह सामग्री ऐसी है जिससे लेखक और रचना के बावत सोचने-समझने के लिए एक संदर्भ और परिसर मिल जाता है । निश्चय ही इस सामग्री के संयोजन में इस ओर से सजगता बरती गई है कि यह सहायक और सांकेतिक हो; इतनी मुखर, प्रधान और दबंग नहीं कि लेखक और रचना के लिए बाधक पूर्वग्रह बन जाए । रचनाकारों के चित्रों के अतिरिक्त प्रायः पाठों के साथ कला-सज्जा के रूप में 'मधुबनी कला' और कुछ अन्य प्रकीर्ण सामग्री का उपयोग किया गया है । ऐसी आशा की जाती है कि यह संयोजन रचनात्मक सहकार का नमूना साबित होगा, कुछ अखरनेवाला और बाधक नहीं ।

इस पुस्तक में जिन रचनाकारों, कलाकारों, विभूतियों और स्रोतों का समावेश है उन सबके प्रति हम कृतज्ञताबोध से भरे हुए हैं । 'बात बालेगी, हम नहीं'–यही उचित और वांछित है ।

हेमंत कुमार हिमांशु
समन्वयक, हिंदी भाषा समूह

भृगुनंदन त्रिपाठी
अध्यक्ष, हिंदी भाषा समूह

अनुक्रमणी

गद्यखंड

1.	बातचीत	बालकृष्ण भट्ट	11
2.	उसने कहा था	चंद्रधर शर्मा गुलेरी	18
3.	संपूर्ण क्रांति	जयप्रकाश नारायण	32
4.	अर्धनारीश्वर	रामधारी सिंह दिनकर	44
5.	रोज	सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय	53
6.	एक लेख और एक पत्र	भगत सिंह	66
7.	ओ सदानीरा	जगदीशचंद्र माथुर	78
8.	सिपाही की माँ	मोहन राकेश	99
9.	प्रगीत और समाज	नामवर सिंह	107
11.	जूठन	ओमप्रकाश वाल्मीकि	118
12.	हँसते हुए मेरा अकेलापन	मलयज	127
13.	तिरिछ	उदय प्रकाश	136
14.	शिक्षा	जे० कृष्णमूर्ति	155

काव्यखंड

1.	कड़बक	मलिक मुहम्मद जायसी	165
2.	पद	सूरदास	170
3.	पद	तुलसीदास	175
4.	छप्पय	नाभादास	180
5.	कवित्त	भूषण	184
6.	तुमुल कोलाहल कलह में	जयशंकर प्रसाद	189
7.	पुत्र-वियोग	सुभद्रा कुमारी चौहान	193
8.	उषा	शमशेर बहादुर सिंह	199
9.	जन-जन का चेहरा एक	गजानन माधव मुक्तिबोध	204
10.	अधिनायक	रघुवीर सहाय	210
11.	प्यारे नन्हें बेटे को	विनोद कुमार शुक्ल	215
12.	हार-जीत	अशोक वाजपेयी	222
13.	गाँव का घर	ज्ञानेंद्रपति	227

प्रतिपूर्ति

1.	रस्सी का टुकड़ा	गाइ-डि मोपासाँ	235
2.	क्लर्क की मौत	अंतोन चेखव	241
3.	पेशगी	हेनरी लोपेज	244

गद्यखंड

अनुभव के धूप-छाँही ब्यौरे

''गद्य लिखना भाषा को सार्वजनिक करते जाना है ।''

– रघुवीर सहाय